

पुस्तक समीक्षा

किताब: हमारी धरती हमारा जीवन
(उत्तराखण्ड क्षेत्र के विद्यालयों की कक्षा 6-10
के लिए पर्यावरण अध्ययन का पाठ्य-क्रम)
लेखक: एम. जी. जैक्सन; अनुवाद: सतीष
दत्त पाण्डेय; प्रकाशक: उत्तराखण्ड पर्यावरण
शिक्षा केन्द्र, अलमोड़ा, उ. प्र.।



पर्यावरण, शिक्षा और आजीविका

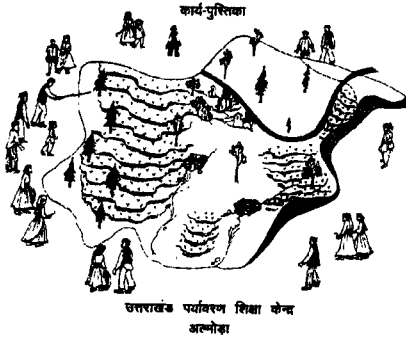
ऐतिहासिक चिपको आंदोलन की जन्मभूमि में पैदा इस कोशिश के कई अनुकरणीय पहलू हैं। जो कार्य उत्तराखण्ड में संभव हैं, वह देश के विभिन्न अंचलों में भी कुछ फेर बदल करके फैलाए जा सकते हैं। . . . पर्यावरण विषय नया ही नहीं बल्कि जटिल भी है। जो तर्क आज सही लगता है, उसे कुछ घटनाएं कल गलत भी साबित कर सकती हैं। इसीलिए पर्यावरण संबंधी मान्यताएं लगातार बदलती रहती हैं। और किसी भी समीक्षा की जिम्मेदारी बन जाती है कि उन परिवर्तनों को इंगित करे ताकि पाठ्यक्रम में भी निरन्तर विकास होता रहे।

जब किसी वस्तु को पाने में असु-विधा होती है तब उसकी कीमत बढ़ने लगती है। शायद यही क्रम पर्यावरण के साथ भी चला। साठ के दशक तक इस देश में इतना साफ पानी था, इसकी नदियां इतनी कोमल थीं, और इसकी जमीन इतनी सुफला

और सजला कि कौन कल्पना कर सकता था कि भोपाल में एक रसायन रातोंरात 2500 प्राणों को काल के पहुंचा सकता है। परन्तु विकास का पहिया कई कलियों को रौंदता हुआ निकल चुका है।

इसका पहला आभास हुआ जब

अपनी घरती, अपना प्रबन्ध,
अपनी जिम्मेदारी



1974 में भारत सरकार ने जल प्रदूषण को रोकने के लिये कानून बनाया। उसके पहले दंड संहिता में अवश्य कुछ धाराएं थीं जिसके तहत किसी को भी सार्वजनिक जगह को गंदा करने से रोका जा सकता था। लेकिन बढ़ती हुई गंदगी को उन नियमों से रोकना असम्भव-सा हो रहा था। इसलिए अधिनियमों की पंक्ति बढ़ती गई। जल प्रदूषण के बाद वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने का कानून, फिर वन कानून में सुधार और वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम। भोपाल कांड के बाद औद्योगिक दुर्घटनाओं संबंधी बीमाकरण भी हुआ और कुछ ही वर्ष बाद पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम भी पारित हो गया।

जैसे-जैसे कानून बनते गए, वैसे ही कुछ व्यक्तियों ने उनका उपयोग भी करना शुरू कर दिया। देश के कई भागों में पर्यावरणीय मसलों को लेकर उथल-पुथल शुरू हुई। कहीं कोई बांध के डूब क्षेत्र से परेशान था तो कहीं कोई दलदल से। कोई कहीं पेड़ बचाने में लगा था तो कहीं और कोई पेड़ उखाड़ने में। कोई साफ पानी के लिए लालायित था तो कोई और दूषित जल से त्रस्त। मुआवजा नियंत्रण और सुरक्षा के लिए अदालतों में याचिकाओं की लम्बी कतार खड़ी है। यहां तक कि सरकार कई दिनों से विशेष पर्यावरण न्यायालयों की भी बात कर रही है।

कुल मिला कर पर्यावरण एक जीवंत विषय बन गया है जो तमाम संगठनों के मानस में समा चुका है। प्रचार प्रसार के माध्यमों में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। जिंदगी के हर पहलू को अब वह प्रत्यक्ष में छूने लगा है। इसी को देखते हुए शायद सर्वोच्च न्यायालय ने तीन वर्ष पहले निर्देश दिए कि विद्यालयीन शिक्षा में पर्यावरण को भी शामिल किया जाए। इसी निर्देश के फलस्वरूप पहले छुटपुट पर्यावरण शिक्षण के जो प्रयोग चल रहे थे उनका विस्तार हुआ है, और काफी पाठ्य-सामग्री का विकास भी हुआ है। इसी शृंखला में उत्तराखण्ड पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, अलमोड़ा द्वारा कक्षा 6 से 10 तक के लिए प्रकाशित तथा प्रसारित

सूखा पदार्थ प्रतिशत निकालने का तरीका

यह बॉक्स असल में बॉक्स 8-2 का ही अनुक्रम है जिससे हमने प्रतिशत निकालना सीखा था। पहले हम एक भिन्न बनाते हैं और फिर उसे 100 से गुणा करते हैं।

मान लीजिए हमने चारे के लिए एक गट्टा हरे बांज के पत्ते काटे। उसे हम अपने कमानादार तराजू पर तौलते हैं और उसका वजन 24 कि. ग्रा. निकलता है। हम यह जानना चाहते हैं कि इस 24 कि. ग्रा. में कितना सूखा पदार्थ है और कितना पानी?

यह निकालने के लिए हम एक एक कि. ग्रा. (या 1000 ग्राम) ताज़ी पत्तियों का नमूना लेते हैं। हम उन्हें धूप में सुखाते हैं और एक बार फिर तौलते हैं। मान लीजिए कि सूखे पत्ते 400 ग्राम निकलते हैं। 1000 ग्राम

हमारी धरती, हमारा जीवन शीर्षक का पाठ्यक्रम एक व्यावहारिक तथा सराहनीय प्रयास है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की सहायता व आर्थिक सहायोग से छपी इन पुस्तकों के लेखक हैं एम. जी. जैक्सन। श्री जैक्सन और उनके सहयोगियों ने बड़ी लगन से पाठ्यक्रम को तैयार किया है। स्पष्ट है कि वे उत्तराखंड क्षेत्र की परिस्थिति से अच्छी तरह से परिचित हैं। विशेष तौर पर इन पुस्तकों में कुशलतापूर्वक कई अभ्यास सुझाए गए हैं जिनसे विद्यार्थियों को वस्तु स्थिति को समझने

में मदद मिले और साथ ही रचनात्मक कार्य भी हो।

गांव के परिवेश पर आधारित इस पाठ्यक्रम में कई कलाएं उभारी गई हैं। सरल विधियों द्वारा ज़मीन, पानी, फसल, घास इत्यादि को नापना, पौधों को उगा कर कलम लगाना, ईंधन और चारे की व्यवस्था करना, चूल्हे और शौचालय का निर्माण करना, तथा इस प्रकार के व्यावहारिक कामों से स्कूली शिक्षा को जोड़ना। इन पुस्तकों में इस संबंध में उपयोगी अनुभवों का भंडार है। इसके अलावा अपनी धरती, अपना प्रबंध, अपनी जिम्मेदारी शीर्षक से

ताजे पत्तों में केवल 400 ग्राम सूखा पदार्थ है। इस तरह
 $1000 - 400 = 600$ ग्राम पानी था।

चारे का सूखा पदार्थ प्रतिशत क्या हुआ? पहले हम एक भिन्न बनाते हैं, जैसे -

$$\frac{\text{सूखे पत्तों का वजन}}{\text{ताजे पत्तों का वजन}} = \frac{400 \text{ ग्राम}}{1000 \text{ ग्राम}}$$

फिर हम प्रतिशत निकालने के लिए इसे 100 से गुणा करते हैं, जैसे -

$$= \frac{400}{1000} \times 100$$

$$= 40$$

इस तरह ताजी पत्ती चारे का सूखा पदार्थ प्रतिशत है 40.

आइए अब यह देखते हैं कि इस प्रतिशत संख्या को हम व्यावहारिक समस्याएं सुलझाने में कैसे उपयोग कर सकते हैं?

पहली वाली समस्या में हमने कहा था कि हमारा चारे का गट्ठा 24 कि. ग्रा. का था। अगर हम पूरे गट्ठे को सुखा लेते तो उसका वजन कितना होता? निश्चय ही पूरे गट्ठे को सुखाना बहुत बड़ा काम है। इसीलिए तो शुरू में हमने सिर्फ 1 कि. ग्रा. का एक नमूना लिया था। क्योंकि हम जानते

एक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका और एक कार्य-पुस्तिका भी प्रकाशित की गई है; जिनमें पाठ्यक्रम के सिद्धांतों को ग्रामीण समाज तक पहुंचाने की कोशिश की गई है।

ऐतिहासिक चिपको आंदोलन की जन्मभूमि में पैदा इस कोशिश के कई अनुकरणीय पहलू हैं। जो कार्य उत्तराखंड में संभव हैं, वह देश के विभिन्न अंचलों में भी कुछ फेर बदल करके फैलाए जा सकते हैं। ध्यान देने लायक बात यह है कि पर्यावरण विषय

नया ही नहीं बल्कि जटिल भी है। जो तर्क आज सही लगता है, उसे कुछ घटनाएं कल गलत भी साबित कर सकती हैं। जैसे कि बीस वर्ष पहले माना जाता था कि मलेरिया समाप्त करने का उत्तम तरीका डी.डी.टी. छिड़कना है। परन्तु वर्तमान में सभी जान गए हैं कि जहां एक तरफ मच्छर इस दवा को हजम कर गया है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य ही धीरे-धीरे उसका शिकार हो गया है। इसीलिए पर्यावरण संबंधी मान्यताएं लगातार बदलती

हैं कि ताजे पत्तों में 40 प्रतिशत सूखा पदार्थ होता है, हम यह निकाल सकते हैं कि अगर उसे सुखाया जाए तो पूरे गट्टे का वजन कितना होगा? गट्टे के चारे का सूखा वजन = 24 कि. ग्रा. × ताजे पत्तों का प्रतिशत सूखा पदार्थ

$$\begin{aligned} & \frac{100}{100} \\ & = 24 \text{ कि. ग्रा.} \times 40 \\ & \frac{100}{100} \\ & = 9.6 \text{ कि. ग्रा.} \end{aligned}$$

अब यह मानिए कि हमारा वह चारे का गट्टा एक ही पेड़ से काटा गया था। हमारे पोषक क्षेत्र में प्रति नाली 20 ऐसे पेड़ हैं, तो फिर प्रति नाली चारा सूखा पदार्थ का प्रतिशत क्या हुआ?

पहले प्रति नाली चारे की उपज निकालिए।

$$\begin{aligned} \text{ताजा चारा प्रति नाली} &= 24 \text{ कि. ग्रा.} \times 20 \\ &= 480 \text{ कि. ग्रा.} \end{aligned}$$

अब इस संख्या को उसके तुल्यमान सूखा पदार्थ परिमाण में बदलिए।

$$\begin{aligned} \text{एक नाली में उपजा सूखे चारे का वजन} &= \frac{480 \times 40}{100} \\ &= 192 \text{ कि. ग्रा.} \end{aligned}$$

रहती हैं। और किसी भी समीक्षा की जिम्मेदारी बन जाती है कि उन परिवर्तनों को इंगित करे ताकि पाठ्यक्रम में भी निरन्तर विकास होता रहे।

इन पुस्तकों में कुछ सुधार यदि शैली में किया जाए तो वे और लोकप्रिय हो सकती हैं। सतीश दत्त पाण्डेय ने बड़ी मेहनत से हिन्दी अनुवाद किया है। ऐसी कठिन और तकनीकी विद्या को स्कूली बच्चों के लिए रोचक बनाना

कोई आसान काम नहीं है। आशा है कि अगले संस्करण में भाषा और सरल की जाएगी और हिन्दी की जगह हिंदुस्तानी का प्रयोग किया जाएगा ताकि आम लोग भी बात की नस को पकड़ सकें। गणना, चित्रण और व्याकरण की जो छोटी मोटी गलतियाँ हैं उन्हें भी निस्संदेह सुधार लिया जाएगा। एक दिलचस्प बात है कि अंग्रेजी में बड़े और छोटे को सम्बोधित करने में कोई अंतर नहीं है परन्तु हिन्दी

के अवतरित रूप में अनुवादक आप और तुम के बीच में लटक गए हैं।

दूसरी बात है कि शायद उत्तराखंड के ग्रामीण स्कूली बच्चों की वास्तविक अवस्था की पहचान की कमी है। कक्षा आठ के विद्यार्थी की एक आदर्श छवि है, परन्तु अधिकतर जगहों पर वास्तविक विद्यार्थी उससे कोसों दूर है। इसीलिए लगता है कि किसी अभ्यास के लिए जिस हुनर की अपेक्षा है वो शायद असलियत में मौजूद ही न हो। मसलन साक्षर ग्रामवासियों से उम्मीद की गई है कि वे पूरे परितंत्र का लेखा जोखा कर लें, परन्तु अन्य जगह जो उदाहरण दिया गया है उसमें दूध उत्पादन का अनुमान लगाने का काम कक्षा 10 के विद्यार्थी ही कर पाए हैं। इसी प्रकार यह सोचना कि 12-13 वर्ष के छोटे बच्चे 50 किलोग्राम की क्षमता की कमानादार तुला लेकर बांट सहित पहाड़ी रास्तों में ग्राम का भ्रमण करेंगे तो यह शायद बच्चों से ज्यादाती है।

यदि उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में — जहां पेड़ कटाई या चराई या आग से विनाश हुए हैं — जल और मिट्टी के बहाव को नापने का अभ्यास दिया जाता तो वे स्वयं तय कर पाते कि किस स्थिति में सबसे अधिक भूक्षरण हो रहा है। पटवारी से यदि वे स्वयं आंकड़े मांगते (पाठ्यक्रम में शिक्षक इसकी व्यवस्था करते हैं) और फिर उन आंकड़ों की तुलना वस्तुस्थिति से करते तो

विद्यार्थियों को सरकारी तंत्र की कर्मठता और विश्वसनीयता को परखने का भी मौका मिलता। इस प्रकार की कई और सुधार की सम्भावनाएं हैं जो अनुभव के साथ उभरेंगी। इसमें भी कोई शंका नहीं कि उत्तराखंड सेवा निधि में ऐसे अनुभवों को सूत्र में बांधने की पूरी क्षमता है।

पुस्तकमाला में एक चीज यदि खटकती है तो वह है मूल सिद्धांतों में एक विशिष्ट दृष्टिकोण का वर्चस्व। इसके कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं। पुस्तकों में इस बात को बार-बार दोहराया गया है कि चराई ही उत्तराखंड के वनों के विनाश का मुख्य कारण है और इसलिए जानवरों को खूटे पर खिलाना चाहिए। चराई के साथ आबादी की बढ़ोत्तरी, आग और (ग्रामीणों द्वारा) पेड़ कटाई को भी जंगल की दुर्गति के लिए दोषी ठहराया गया है। 'दंडक' और 'चिपको' की कर्मभूमि में यह मान्यता कुछ अटपटी-सी लगती है। पूरी पुस्तकमाला में (कार्य-पुस्तिका में एक वाक्य को छोड़कर) कहीं भी इस ऐतिहासिक तथ्य का उल्लेख नहीं है कि अंग्रेज हुकूमत ने बहुत बड़े पैमाने पर वनों को ग्राम समाज के अधिकार से छीन कर, उन्हें व्यवसायिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए एक छोर से दूसरे छोर तक साफ कर डाला। इसी क्रम में बांज को समाप्त कर दिया गया ताकि अधिक

पेड़ों से बीज कैसे एकत्र करें

अकेसिया (अकेसिया डेब्यूरेंस, अकेसिया मिर्न्सी)

अकेसिया में हर साल बीज बनते हैं। जनवरी माह में पीले रोएंदा र फूल आते हैं। बीज लगभग 10 से. मी. लंबी पतली फलियों में रहते हैं। फलियां जून माह में पकती हैं। पकने पर वे फट से खुल जाती हैं और बीजों को पेड़ से कुछ दूरी पर छिटका देती हैं। इसलिए फलियों को खुलने से पहले ही तोड़ लेना होता है। फलियों को धूप में सुखाकर हल्की गहाई की जाती है। 1000 बीजों का वजन लगभग 14 ग्राम होता है। कस कर बन्द किए गए प्लास्टिक के थैलों में वे कई साल तक अंकुरण क्षमता रखते हैं।

बांज (कैरकस ल्यूकोट्राकोफोरा)

... याद रखिए कि बांज के पेड़ आम तौर से हर दूसरे साल ही अच्छी बीज पैदावार करते हैं। बीजों को कस कर बन्द किए गए प्लास्टिक के थैलों में एक साल तक रखा जा सकता है ताकि अगले साल उपयोग किया जा सके। हां, उनकी अंकुरण क्षमता थोड़ी बहुत कम हो जाएगी। 1000 बीजों का वजन लगभग दो किलो होता है।

‘मूल्यवान’ चीड़ उसकी जगह ले सके।

यही ‘मूल्य’ की समझ पाठ्यक्रम की बुनियाद में विराजमान है। पूरी शिक्षा का उद्देश्य ही है ‘अधिकतम सम्भव उत्पादकता’ को हासिल करना। ऐसे संदर्भ में उपयोगिता की परिभाषा केवल मानव समाज से जुड़ी है — बीज, पशु आहार और भूसे की जरूरतें अनाज का ‘नष्ट’ होना हुआ।

मानवों में भी कोई भेद भाव नहीं है; गांव में सभी को बराबर मान लिया गया है, पुरुष और महिला में कोई अंतर नहीं है। सुरक्षा केवल दीवारें

प्रदान कर सकती हैं; ग्राम सभा के सामूहिक निर्णय द्वारा चराई के क्रम को तय करने को कोई महत्व नहीं दिया गया है।

घास चारा को पत्ता चारा से हीन माना गया है; घास की चराई का खाद, घासनियों के स्वास्थ्य और आहार की दृष्टिकोण से सम्बंधों का कोई उल्लेख नहीं है। निजी स्वार्थों को ‘टिकाऊ उत्पादन’ और ‘रख-रखाव’ के लिए अहम् ठहराया गया है; सार्वजनिक प्रक्रियाओं और संयुक्त परिवार को अड़चन के रूप में प्रस्तुत

किया गया है।

ये समस्त मान्यताएं एक तरह से आधुनिक विकास और विज्ञान के बेहंगे समझ की देन हैं। मनुष्य की बुनियादी जरूरतों को पानी, दूध, ईंधन और पैसों तक सीमित करके, आधुनिकता में सामाजिक रिश्तों, शादी, त्यौहार, जन्म, मृत्यु, दुख और सुख के लिए कोई स्थान बाकी नहीं रह जाता। तमाम पारम्परिक तरीकों की बलि चढ़ा दी जाती है और नागफनी के जीवंत संधान की जगह केवल मृत शिलाओं की दीवार ही नज़र आती है। पानी को नियंत्रित

करने के लिए प्लास्टिक की चादरें, पाइप और टैंक, पहाड़ी झरनों के कलरव को मूक कर देती हैं।

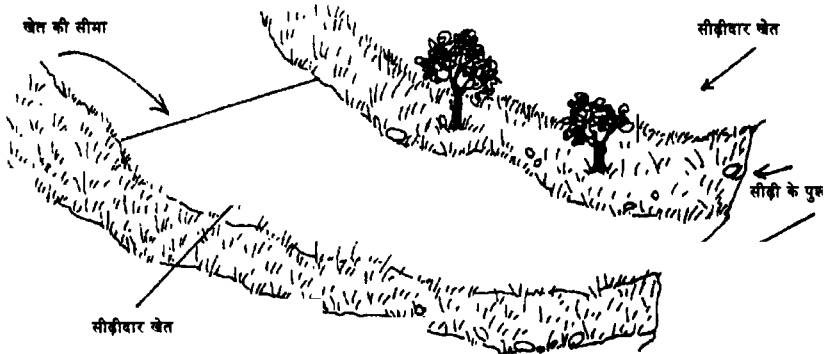
अंत में पुस्तकों के पन्नों में से मानो पहाड़ का भाव विहीन चेहरा ही झांक रहा हो। उस चेहरे को 'उत्पादकता' और 'उन्नतशीलता' के खूनी पिस्तुओं से आखिर कौन बचाएगा? मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इस भेंट में मानव एक निर्जीव संसाधन मात्र प्रकट होता है।

डूनु रॉय -

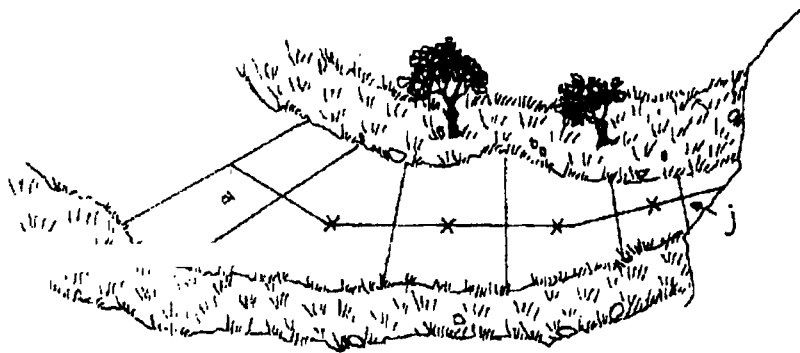
कक्षा-8 की किताब का एक पाठ

एक टेढ़े तिरछे खेत को नापने का तरीका

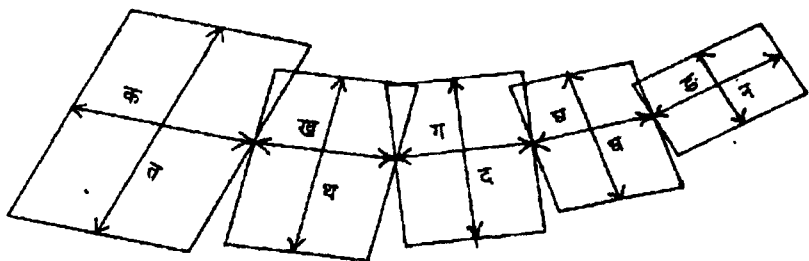
अभ्यास-2 (कक्षा-6) में आपने खेतों को साफ सुथरे वर्गों और आयतों में बांटा था। इनमें से किसी की भी लंबाई को उसकी चौड़ाई से गुणा करके आप सरलता से उसका क्षेत्रफल निकाल लेते थे। किसी गांव में ऐसे वर्गाकार या आयताकार खेत नहीं होते। आप देखेंगे कि वे सब टेढ़े मेढ़े तिरछे होते हैं जैसा कि नीचे के चित्र में दिखाया गया है।



किसी ऐसे खेत का क्षेत्रफल निकालने का सैद्धांतिक तरीका है - इसको कई छोटे-छोटे समान आयताकार या वर्गाकार टुकड़ों में बांटकर उनका क्षेत्रफल निकालना तथा फिर पूरे खेत का क्षेत्रफल निकालना। यह सीखने के लिए आइए हम कागज़ पर एक अभ्यास करें। खेत को ऊपर के चित्र की तरह अंकित कीजिए। उसके बाद डोरी से कई सीधी पड़ी हुई रेखाएं खींचिए। इन पंक्तियों को नीचे के चित्र में 'क' 'ख' 'ग' 'घ' 'ङ' से दिखाया गया है। जितना ही तिरछा खेत होगा उतनी ही अधिक ऐसी सीधी पड़ी हुई रेखाओं की आपको जरूरत होगी। फिर, हर रेखा के मध्य बिन्दु पर खड़ी रेखाएं डालिए और उन्हें 'त' 'थ' 'द' 'ध' 'न' से चिन्हित कीजिए। इन्हें अनुप्रस्थ रेखाएं कहते हैं।



वास्तव में आप कर यह रहे हैं कि एक बड़े टेढ़े खेत को छोटे-छोटे आयतों में बांट रहे हैं, जैसे -



खेत का क्षेत्रफल लगभग इस प्रकार होगा

$$\text{क्षेत्रफल} = \text{क} \times \text{त} + \text{ख} \times \text{थ} + \text{ग} \times \text{द} + \text{घ} \times \text{ध} + \text{ड} \times \text{न}$$

अतः हम हर आयत का क्षेत्रफल निकालने के लिए उसकी लंबाई को चौड़ाई से गुणा कर देते हैं और फिर सब क्षेत्रफलों को जोड़ कर पूरे खेत का क्षेत्रफल निकाल लेते हैं।

एक उदाहरण देखें : किसी एक खेत में ऊपर वाले चित्र के 'क' और 'त' को नापा जाता है और वे इस प्रकार मिलते हैं -

$$\text{क (चौड़ाई)} = 3.12 \text{ मी. (3 मीटर और 12 सेंटीमीटर)}$$

$$\text{त (लम्बाई)} = 4.05 \text{ मी. (4 मीटर और 5 सेंटीमीटर)}$$

इसी तरह अन्य आयतों की लंबाई और चौड़ाई निकालकर उनका क्षेत्रफल निकाला जाएगा।

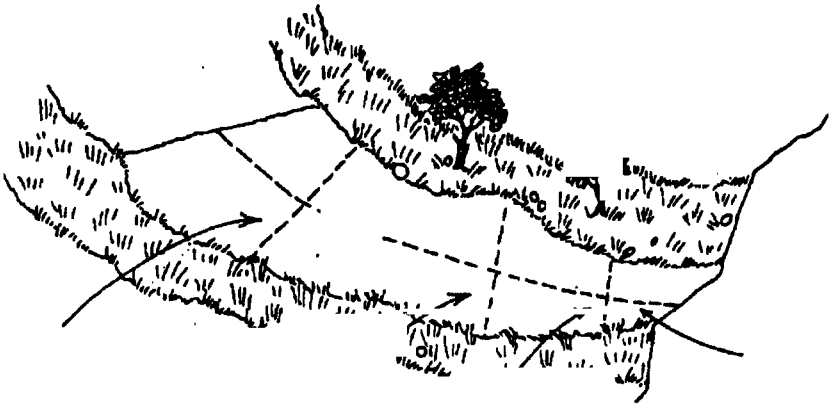
याद रखिए कि इस तरीके से लगभग सही पणाम ही निकलते हैं। कुछ जगहें ऐसी होती हैं जहां आयतों की रेखाएं एक दूसरे के ऊपर पड़ जाती हैं। इस तरह की गलतियां उन जगहों के जोड़-तोड़ से ठीक हो जाती हैं जो किसी भी आयत में नहीं पड़ती।

जब आप किसी खेत को नापने जाएं तो उसे नापने का एक तुरंत और व्यावहारिक तरीका इस प्रकार है:

1. एक सिरे से शुरूआत करके खेत की चौड़ाई को पांच-पांच मीटर के फासले से नापिए (अनुप्रस्थ रेखाएं) और हर नाप को लिखिए। अंत में सबका औसत निकाल लीजिए। यह हुई खेत की चौड़ाई जिसे 'क' कहिए।
2. खेत की लंबाई नापिए। अपनी नाप खेत के सामने और पीछे के किनारों के लगभग बीच में कीजिए, चाहे वह एक तिरछी लाइन ही क्यों न हो। इसे 'ख' कहिए।
3. आपके खेत का क्षेत्रफल है -

$$\text{क्षेत्रफल} = \text{क} \times \text{ख}$$

एक उदाहरण नीचे दिया गया है, हम पृष्ठ 25 पर दिखाए गए खेत को लेंगे, लेकिन उसे एक असली खेत मानकर चलेंगे -



खेत की चौड़ाई को तीन जगहों पर नापिए।
चौड़ाई की रेखाएं जहां वे लंबाई की रेखाओं
को काटें वहां उससे लगभग लंबवत हों।

इस रेखा पर खेत की लंबाई नापिए।

मान लीजिए कि लम्बाई 'क' मीटर है और खेत की चौड़ाई के तीन नाप
हैं 8 मी., 6 मी. और 4 मी.। 'ख' इन तीन नापों का औसत होगा,

$$\text{या } 8 + 6 + 4 = 6 \text{ मी.}$$

$$\begin{aligned} \text{खेत का क्षेत्रफल होगा लगभग} &= 18 \times 6 \\ &= 108 \text{ वर्ग मीटर} \end{aligned}$$

या 1/2 नाली* से थोड़ा अधिक

* पर्वतीय क्षेत्रों में जमीन नापने की इकाई

दुनू रॉय - विद्वेषक कारखाना, अनूपपुर, जिला शहडोल, म.प्र. में लम्बे असें तक रहे। पर्यावरण,
विकास, टेक्नॉलॉजी एवं जनविज्ञान के मुद्दों पर लेखन एवं कार्य। दिल्ली में निवास।

